International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 7 No. 2 January – February - 2026

२१ वीं सदी के हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श

डॉ. व्ही. एस. झगडे

हिंदी विभाग (सहायक अध्यापक),

शारदाबाई पवार महिला महाविद्यालय शारदानगर तह. बारामती

Corresponding Author – डॉ. व्ही. एस. झगडे

DOI - 10.5281/zenodo.18654460

आज नारी जिस मोड़ पर खड़ी है उसके अस्तित्व के प्रति संदेह व्यक्त किया जा रहा है। क्या सचमुच नारी को वह सम्मान प्राप्त हो सका है, जिसकी वह आकांक्षा करती आई है? क्यों आवश्यक हो जाता है कि, पुरुष प्रधान समाज में नारी विमर्श की स्थापना हो और उसे सशक्त बनाया जाए?

21वीं शताब्दी में नारी का उत्थान और पतन दोनों एक ही अनुपात में हुए हैं। उत्थान का तात्पर्य नारी के प्रगतिशील जीवन दर्शन से और पतन का तात्पर्य उसके सामाजिक तिरस्कार से है। परिवार में सामंजस्य और संतुलन बनाए रखने के लिए उसका योगदान उसी के गले आ पड़ा।"नारी लक्ष्मी है, नारी देवी है, नई माता है, किंतु नारी नारी है। यह दर्शन अभी तक पनप नहीं सका। इसलिए तो नारी की स्थिति चिंताजनक है।"1 चिंता का विषय है की नारी आकांक्षा तो करती है किंतु उस आकांक्षा के पीछे अपने आप को नहीं लगा पाती और भटकाव की स्थिति में पहुंच जाती है। लखनऊ के एक स्कूल की अध्यापिका सरला प्रधान का कहना है पुरुष की सत्ता हर कदम पर हर मोड़ पर समायी है इसमें अपने आप को नारी की स्थिति में भी सिद्ध करना अत्यंत कठिन है। केवल अपने स्थिति का बोध होते ही अपने ऊपर तरस खाया जा सकता है। गहराई तक इस तथ्य पर विचार किया जाए तो यह बात सत्य है जब दिशा जागृत होता है तब नारी होने का दुख भारी पड़ने लगता है।

एक चिंता का विषय यह भी है कि, नई ही नारी की निंदिका है। एक नारी ही नारी को नारी की स्थिति में नहीं पहुंचाना चाहती।अतः हिन भावों की व्यापकता पर टिकी नारी उत्थान की पगडंडी टेढ़ी-मेढ़ी होती जा रही है। महिला मंडलों के अंदर चल रही खींचा तानी व टांग खिंचाव संस्कृति महिलाओं को आपसी कुचक्रों की ओर खींच रही है। इससे उनका आत्मविश्वास कम होता है।निर्णय ग्रहण करने की ताकत भी कम हो जाती है। यही स्थिति परिवार में भी देखी जाती है। निष्ठा पूर्ण नारीवाद के संस्कृति की ओर आवश्यकता है जिससे नारी के विचार प्रवाह को एक स्वतंत्र दिशा व गति उपलब्ध हो सकेंगे।

आज हमारा देश अन्य विकसित देशों की तुलना में स्त्रियों के मामले में काफी पीछे है। कुछ स्त्रियों ने अवश्य ही ज्ञान विज्ञान के राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र में अन्य देशों की तुलना में बहुत आगे बढ़कर भारत का नाम उज्ज्वल किया। किंतु तुलना का अनुपात उतना कम है। इसलिए संपूर्ण नारी वर्ग को विचारशील होकर अपने इस दुर्बल पहलू को सशक्त बनाना है।

नारी विमर्श की सफलता का रहस्य नारी के भावुक पक्ष से संबंध रखता है-"भावना से ही उसके विविध रूपों की रचना होती है भावना के आवेश में वह ठगी जाती है और भावना के आवेश से वह कठिन से कठिन कार्य भी कर डालती हैं।"2 अपने पहलू को समाज के सामने प्रस्तुत करने

के लिए भावना से नहीं वास्तविकता से काम लेना होगा। क्योंकि अस्तित्व सिद्ध करना आज की स्थिति में अत्यंत आवश्यक है। अपनी भावना पर नियंत्रण लगाना होगा,भावनात्मक दिशा में तटस्थ रहना होगा। नारी विमर्श के लिए जागृति अभियान से संबंधित 225 सेबी अधिक कायदे कानून बनाए गए हैं। इससे उनके अधिकारों में बढ़ोतरी हुई है। अब आवश्यक है प्रत्येक स्त्री के उन अधिकारों को समझने के योग्यता की।"जैसे-जैसे स्त्री अपने अधिकारों को समझने लगेगी उसका परिवार उसी के अनुरूप ढलने लगेगा। उसकी बेटियां उन संस्कारों से परिचित होकर विवाहोपरांत अपने घर में उन्हें चरितार्थ करने में संकोच नहीं करेगी। घर में उन्हें चरितार्थ करने में संकोच नहीं करेगी। एवं पारिवारिक संघर्षों से उत्पन्न तनावों से मुक्त हो जाएगी। इस परंपरा को रूप देना होगा।"3

अहम के टकरावों की अभेदय मायाजाली शाहिद पति-पत्नी के साथ-साथ समाज में भी बिखराव उत्पन्न करती है। नई टुकड़े-टुकड़े जीवन बीताते बीताते स्वयं भी टुकड़ा बनकर रह जाती है। यह याद रखना चाहिए की नारी नारी है और नारी का अस्तित्व सुखी जीवन का अस्तित्व है।

नारी को चाहिए फूहड़ मानसिकता से ग्रस्त सामाजिक व पारिवारिक क्रियाकलापों पर कठोर कार्यवाही करें। ताकि इस प्रकार की प्रवृत्तियों को बल न मिल सके इससे समाज में व्याप्त महिलाओं की दुर्बलता का भय समाप्त हो जाएगा। आज बोया हुआ बीज भविष्य में फल की आशा पूरी करेगा इस सिद्धांत के आधार पर आगे आने वाले नई पीढ़ी भय मुक्त होगी।

नारी विमर्श का विकास सबसे पहले स्वयं से कीजिए। आधुनिक पत्र पत्रिकाओं की आधुनिकता से दूर हटकर ठोस तथ्य पर गंभीरता से विचार कीजिए। और उसे मनोवैज्ञानिक रूप से अपने जीवन में उतारिए। प्रत्येक नारी जीवन का तौर तरीका उसका अपना और अन्यों के तुलना में अलग होता है।इसलिए और उनकी वैसी की वैसी ही नकल ना करके अपने विवेक और चेतना के मंथन से अपने जीवन का निर्माण करिए।अतिरिक्त समय का उपयोग नारीवाद के सुख समृद्धि का अमूल्य स्रोत है।

वर्तमान परिवेश में समाज का स्वरूप बदल रहा है। भूमंडलीकरण जैसे प्रभावों में हमारी सांस्कृतिक विरासत खत्म होती जा रही है। हमारे जीवन मूल्यों में निरंतर गिरावट आ रही है। भौतिकवाद पूरी तरह हावी होता जा रहा है। इन सभी का सीधा प्रभाव नारी जीवन पर पड़ रहा है। हमारी संस्कृति में नारी पूज्या थी वह असुर्यमप्शा थी। वह परिवार की चार दिवारी में कैद थी, परंतु आज वह पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है। वह दहलीज लांघ चुकी है। टूटते परिवारों के कारण नारी के प्रति चिंतन में आमूल चूल परिवर्तन आ गया है। अतः आज के परिवेश में नारी विमर्श महत्वपूर्ण हो गया है। नारी विमर्श को किसी सीमा में नहीं बांधना चाहिए।

यह सही है कि नारी विमर्श आधुनिक समाज की अध्ययन पद्धतियों में एक है। पर उसकी सामाजिक जरूरत हर समाज व काल में रही है। इसलिए हर समय में वह प्रासंगिक है। भारतीय परिपेक्ष में परंपरागत सामाजिक ढांचा, अनेकों पूर्व धारणाएं, रीति रस्म, अंधविश्वास, प्रथाएं आदि के कारण नारी विमर्श की एक आम पद्धति रूपायित होना मुश्किल है। बहुलता के अनुरूप भारत में नारी विमर्श चालू है इसलिए उसका स्वरूप भी नानात्व में एकत्व का है। यह उसकी सीमा है, दूसरे अर्थ में यही उसकी शक्ति है। एक होने के कारण वह समान संगठित नहीं, वह प्रादेशिक स्वरूप में कार्य करता है, उसका कार्य शिथिल है। इसलिए राजनीतिक लेनदेन में वह पीछे पड़ जाता है। आरक्षण का नियम पास न होने का यही कारण ।है। "स्त्री होने वह बहानापा महसूस करने पर भी पार्टी के विरोध में महिला सांसद कुछ कर नहीं पाती यद्यपि वे नारी के पक्ष में हमेशा बोलती रहती है।"4

दुनिया और समाज को देखने का नारी का अपना दृष्टिकोण उसके विशेष अनुभवों को अभिव्यक्ति देने के लिए ही किया जाता है।"समाज और परंपरा द्वारा नारी पर जो विशेषण आरोपित किये जा रहे हैं उनसे वह मुक्त होना चाहती है। वह अपेक्षा करती है कि उसे भी मानवी का दर्जा मिले।"5 कथाकार नारी के अस्तित्व को स्वतंत्र रूप में चित्रित कर रहे हैं।

वर्तमान में नारी विमर्श महत्वपूर्ण है ही, 21वीं शती में लोकतांत्रिक देश में संवैधानिक अधिकारों को मद्देनजर रखते हुए हाशिए पर स्थित, दमित, कुचले जनों को अभिव्यक्ति का साहस, स्वतंत्रता मिले, यह स्वाभाविक है। लेकिन अफसोस है कि प्रगत,अग्रसर उच्च विद्या विभूषित स्त्रियों का लेखन ही नारी विमर्श बना है। अन्य चुप है, उनकी चुप्पी तोड़ने की पहल किसी ने नहीं की है। क्यों?

वैसे नारी विमर्श हर युग में महत्वपूर्ण है। पर वर्तमान परिवेश में समाज, राजनीति यहां तक की परिवार में भी उसका प्रवेश हो चुका है।"सदियों से हमारे समाज ने स्त्री पर अनगिनत अन्याय करके जो पाप किए हैं उन्हें धोने के लिए, नारी को मनुष्य के रूप में हर अधिकार से संपन्न करने के लिए नारी तथा पुरुष दोनों की मानसिकता में परिवर्तन आना जरूरी था और है।"6इसके लिए नारी विमर्श आज महत्वपूर्ण है।

संदर्भ:

1) स्त्री विमर्श: साहित्यिक और व्यावहारिक संदर्भ, डॉ करूणा उमरे, पृ.क्र.141.
2) स्त्री विमर्श: साहित्यिक और व्यावहारिक संदर्भ, डॉ करूणा उमरे पृ.क्र.142.
3) वही, अमन प्रकाशन, रामबाग कानपुर, प्रथम संस्करण2009, पृ.क्र.142
4) हिंदी कहानी और नारी विमर्श के अहम सवाल: डॉ . शोभा पवार पृ.क्र.23
5) वही पृ.23
6) वही, अन्नपूर्णा प्रकाशन, साकेत नगर, कानपुर, प्रथम संस्करण 2009, पृ.24